प्रश्न–अरस्तू के 'अनुकरण सिद्धान्त' का विवेचनात्मक परिचय दीजिए.

उत्तर–प्लेटो से पूर्व ही यह मत था कि कलाकार वास्तविक जगत् के पदार्थों का निर्माण नहीं करता है, वह तो केवल उनके छायाभास का ही निर्माण करता है. इसलिए तत्कालीन पाश्चात्य विचारक कला को अनुकरणात्मक मानते थे. अरस्तू के गुरु प्लेटो का भी यही विचार था. प्लेटो मूलादर्श को ईश्वरकृत वास्तविक सत्ता मानता था और उसके सूक्ष्म जगत् का अनुकरण ही वह स्थूल जगत् को मानता था. इस प्रकार प्लेटो का विश्वास था कि यह दृश्यमान जगत् वैचारिक आदर्श जगत् की अनुकृति मात्र है. प्लेटो दैवी कलाओं के समान मानवी कलाओं के भी दो भेद मानता था–उत्पादक कला तथा अनुकरणात्मक कला. अनुकरणात्मक कला को वह वास्तविक तथा कल्पित रूप में पुनः दो प्रकार की मानता था. इस आधार पर उसने वस्तु के तीन रूप बताए–आदर्श, वास्तविक तथा अनुकरणात्मक. इस सम्बन्ध

Scanned with CamScanner

में प्लेटो ने एक पलंग का उदाहरण देकर बताया कि उसके तीन रूप होंगे- एक आदर्श रूप, दूसरा बढ़ई द्वारा निर्मित रूप तथा तीसरा चित्रकार द्वारा चित्रित रूप. इस प्रकार प्लेटो का अनुकरण सिद्धान्त कला के क्षेत्र में परवर्ती समीक्षकों के लिए आधार स्वरूप बन गया. क्योंकि प्लेटो कला और अनुकरण का घनिष्ठ सम्बन्ध मानता था, परन्तु प्लेटो ने अनुकरण का समर्थन उसी सीमा तक किया, जहाँ तक अनुकरण योग्य वस्तु शुभ हो और वह अनुकरण सत्य के समीप हो.

अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त

अनुकरण का सिद्धान्त यद्यपि प्लेटो से पूर्ववर्ती विद्वानों के द्वारा मान्य था और प्लेटो ने भी कला समीक्षा की दृष्टि से उसे माना, परन्तु इस सिद्धान्त को अतीव व्यापक दृष्टि प्रदान करने का श्रेय अरस्तू को है. काव्य-कला को विशुद्ध दार्शनिक, राजनैतिक तथा नीतिशास्त्र की दृष्टि से न देखकर अरस्तू ने सौन्दर्यशास्त्र की दृष्टि से देखा और काव्य को कला के रूप में प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया. इस सम्बन्ध में उनका कथन है कि चित्रकार या अन्य किसी भी कलाकार के समान कवि अनुकर्त्ता है और वह काव्य के माध्यम से प्रकृति का अनुकरण करता है, परन्तु 'प्रकृति' और 'अनुकृति' इन दो शब्दों का स्पष्टीकरण करते हुए अरस्तू ने उन सब आक्षेपों का निराकरण किया, जिनसे प्लेटो के विचारों पर न्यूनता का आरोपण किया गया था.

'प्रकृति का अनुकरण' यह धारणा अरस्तू की मौलिक नहीं है. उसने अपने गुरु प्लेटो द्वारा प्रयुक्त 'Mimesis' शब्द को स्वीकार करके उसे एक नवीन अर्थ प्रदान किया. प्लेटो ने 'अनुकरण' शब्द का प्रयोग हू ब हू नकल करने के अर्थ में किया था, परन्तु अरस्तू ने इसके कोषगत अभिधेयार्थ को ग्रहण न करके इसे विस्तृत और निश्चित अर्थ देने का प्रयास किया. उसने अपने युग में प्रचलित 'कला अनुकरण है' सूत्र को स्वीकार तो किया, परन्तु उसकी नवीन व्याख्या की और प्राचीन यूनानी आचार्यों के विपरीत काव्य-कला को राजनीति या नीतिशास्त्र की दृष्टि न देखकर सौन्दर्यशास्त्र की दृष्टि से देखा–

1. **मुख्य स्थापना**–अरस्तू के अनुसार, "कविता सामान्यतः मानवीय प्रकृति की दो सहज प्रवृत्तियों से उद्भूत हुई जान पड़ती है. इनमें से एक है–अनुकरण की प्रवृत्ति. कला प्रकृति का अनुकरण करती है." यहाँ प्रश्न उठता है कि प्रकृति से अरस्तू का क्या अभिप्राय है. क्या वह जगत् के बाह्य, स्थूल और गोचर रूप को–पर्वत, नदी, पशु आदि को प्रकृति के अन्तर्गत मानता है ? इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर है 'नहीं'. उसके अनुसार प्रथम तो मानवेतर प्रकृति का अनुकरण करना 'अनुकरणात्मक कला' का काम नहीं, दूसरे कवि या कलाकार प्रकृति की गोचर वस्तुओं का नहीं, वरन् प्रकृति की सर्जन-प्रक्रिया का अनुकरण करता है. उसके अनुसार

Scanned with CamScanner

अनुकरण का विषय गोचर वस्तुएँ न होकर, उनमें निहित प्रकृति-नियम हैं. उसने अपने ग्रन्थ 'पालिटिक्स' में लिखा है, "प्रत्येक वस्तु पूर्ण विकसित होने पर जो होती है, उसे ही हम उसकी प्रकृति कहते हैं."

प्रकृति इसी आदर्श रूप की उपलब्धि की ओर निरन्तर कार्यरत रहती है, किन्तु कई कारणों से वह अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति में सफल नहीं हो पाती. कवि या कलाकार उन अवरोधक कारणों को हटाकर प्रकृति की सर्जन-क्रिया का अनुकरण करता हुआ प्रकृति के अधूरे काम को पूरा करता है. वह प्रस्तुत वस्तु को ऐसा रूप प्रदान करता है कि उससे उस वस्तु के विश्वव्यापक और आदर्श रूप का बोध हो जाए. इस प्रकार अरस्तू के अनुसार अनुकरण एक सर्जन-क्रिया है.

अरस्तू प्रकृति के दो भेद मानता है—बाह्य प्रकृति और मानव प्रकृति. ये दोनों परस्पर सम्बद्ध हैं और एक-दूसरे को पूर्णता प्रदान करती हैं. इन दोनों से पूर्ण सत्य के दर्शन हो जाते हैं. इस सम्बन्ध में अरस्तू का कथन है कि प्रकृति की प्रतिच्छाया उसके अनुकरण में रहती है, परन्तु वह कोरी प्रतिच्छाया नहीं है. यदि कविता भी केवल प्रकृति का दर्पण या प्रतिबिम्ब होती, तो वह हमें उससे अधिक नहीं दे सकती थी, जो कि प्रकृति देती है, परन्तु तथ्य यह है कि हम कविता का आस्वादन इसलिए करते हैं कि वह हमें वह सौन्दर्य प्रदान करती है, जो प्रकृति नहीं देती है. इस तरह अरस्तू ने कविता में अनुकरण का वही अर्थ ग्रहण किया है, जो अर्थ आजकल हम तन्त्र या शिल्प का ग्रहण करते हैं. इसका आशय यह है कि वस्तु-जगत् के द्वारा कवि की कल्पना में जो वस्तु रूप प्रस्तुत होता है, कवि उसी को भाषा में प्रस्तुत करता है. सारांश यह है कि अनुकरण का अर्थ हू ब हू नकल नहीं, बल्कि संवेदना, अनुभूति, कल्पना, आदर्श आदि के प्रयोग द्वारा अपूर्ण को पूर्ण बनाना है. कवि सर्जन प्रक्रिया में निरत होकर यही करता है.

2. **अनुकरण के उपादान**—अरस्तू के अनुसार कलाकार तीन प्रकार की वस्तुओं में से किसी एक का अनुकरण करता है. भौतिक जगत् में वस्तुओं के तीन प्रकार ये हैं—पूर्वरूप जैसी थी, वर्तमान रूप जैसी प्रतीत होती है तथा कलाकार द्वारा गृहीत अनुकरण रूप. अतः कलाकार इनमें से किसी एक का ही अनुकरण करता है. इससे स्पष्ट है कि अरस्तू के काव्य का विषय प्रकृति के प्रतीयमान, सम्भाव्य तथा आदर्श रूप को मानता है. कवि को स्वतन्त्रता है कि वह प्रकृति को उस रूप में चित्रित करे जैसे वह उसकी इन्द्रियों को प्रतीत होती है अथवा जैसी वह भविष्य में प्रतीत हो सकती है या फिर जैसी वह होनी चाहिए. इस चित्रण में निश्चय ही कवि की भावना और कल्पना का योगदान होगा, वह नकल मात्र नहीं होगा प्रतीयमान एवं सम्भाव्य रूप में यदि वह भावना और कल्पना का आश्रय लेगा, तो आदर्श रूप में वह अपनी रुचि, इच्छा

Scanned with CamScanner